इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

सत्यवान सावित्री सौभाग्य शक्ति साधना

वट सावित्री दिवस - 16 मई

वट सावित्री स्त्रीयों के लिए **सौभाग्य वर्धक** माना जाता है। **स्त्रीयाँ** अपने पति के **दीर्घायु जीवन** की कामना से ये **व्रत** रखती हैं। इस व्रत को करने वाली **स्त्री** को **अखण्ड सौभाग्य** की **प्राप्ति** होती है। इस **साधना** को सम्पन्न करने से **सावित्री सौभाग्य** युक्त **दीर्घायु गृहस्थ सुख** व **संतान सुसंस्कारवान** होते हैं तथा सभी **अनिष्टों** के **शमन की चेतना** से **आप्लावित** होते हैं।

उच्छिष्ट गणपति साधना

विनायक चतुर्थी - 20 मई

भगवान श्री गणेश आदि स्वरुप में **पूर्ण कल्याणकारी देवताओं** के **अधिपति** हैं, जिन्हें **प्रसन्न** करने के लिए **समुचित प्रबन्ध** करना पड़ता है। **मनुष्य** के **जीवन की बाधायें** उसकी **बुद्धि** एवं **कार्य** के **विकास** को रोक देती हैं। **आसुरी प्रवृत्ति** तथा **अभक्तों** के लिए **गणेश विघ्नकर्ता** हैं, वहीं उनकी **पूजा उपासना** करने वालों के लिए **विघ्नहर्ता** और **रिद्धि-सिद्धि** प्रदाता हैं। **वाद-विवाद, मुकदमा-लड़ाई, शत्रु बाधा, शान्ति, भय नाश** इत्यादि के लिए **उच्छिष्ट गणपति साधना** करना आवश्यक है।

गृहस्थ चेतना प्राप्ति सिद्धाश्रम शक्ति दीक्षा

सिद्धाश्रम शक्ति दिवस - 21 मई

जीवन की **दो धारायें** हैं, एक **गृहस्थ** और दूसरा **सन्यस्थ**। ये दोनों **सदा समाज** में **निरन्तर** बहती रहती हैं। यदि अपने पास देखा जाये तो **सैकड़ों व्यक्तियों** के **जीवन** से **सहज आनन्द, सहज हास्य, सहज गति,** समाप्त सी हो गयी है। उन्हें ये नहीं पता कि **जीवन** में **लक्ष्य निर्धारित** क्या करें। **आजीविका का साधन, धन संग्रह करना,** जीवन का एक **आवश्यक अंग** है। किन्तु यह किसी भी **साधक-शिष्य, विचारशील व्यक्ति** का **लक्ष्य** नहीं हो सकता। **व्यक्ति गृहस्थ** होते हुये भी **पूर्ण सन्यासी** हो सकता है। **गृहस्थ जीवन** के सभी **अटकाव, बाधाओं, न्यूनताओं,** साधना में **असफलता** की समाप्ति हेतु यह **दीक्षा** प्राप्त कर, **सद्गुरुदेव** की ही भांति **गृहस्थ** और **सन्यास** जीवन को **पूर्णता** के साथ **आत्मसात** कर सकेंगे।

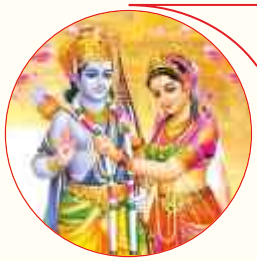

पुरुषोत्तम जानकी अखण्ड सौभाग्यता दीक्षा

पुरुषोत्तम पूर्णिमा - 30 मई

भगवान श्री राम तथा **जनक नन्दनी सीता जी** का **विवाह** एक आदर्श स्थापित करता है। पूरे **विश्व** में उनके **जीवन चरित्र** का लोगों के ऊपर इतना **अत्यधिक प्रभाव** है कि प्रति **नाटक मंच** के द्वारा उनका **जीवन चरित्र** जगह-जगह दिखाया जाता है। क्योंकि **भगवान श्री राम** ने पूरे जीवन भर **पत्नी व्रत** निभाया, एक **आज्ञाकारी पुत्र** का **कर्त्तव्य** निभाया, एक **सर्वश्रेष्ठ मर्यादित जीवन** का उदाहरण प्रस्तुत किया। **माता सीता** ने भी एक **आदर्श पत्नी,** एक **आदर्श नारी** का जो स्वरुप प्रस्तुत किया वह **स्तुति योग्य** है। **पुरुषोत्तम पूर्णिमा** पर इन्हीं सब **सुस्थितियों** की प्राप्ति हेतु **सद्गुरुदेव** से यह **दीक्षा** अवश्य ग्रहण करें।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।